राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका

डॉ ईशा शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर

बाबू बनारसी दास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, गाजियाबाद

सार - जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार किया जाता है । उस कुल पर देवता प्रसन्न रहते है । जिस कुल में स्त्रियों का तिरस्कार किया जाता है । वहाँ पर किये गये सभी कर्म धर्म निष्फल होते है अर्थात उन कर्मों व धर्म कार्यों का कोई पुण्य प्राप्त नहीं होता । नारी भारतीय जनजीवन की मूल धुरी है । यदि कहा जाय कि संस्कृति परम्परा या धरोहर नारी के कारण ही पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रही है , तो यह कोई अतिश्योक्ति नही होगी । जब - जब समाज में जड़ता आई है , नारी शक्ति ने ही उसे जगाने के लिए तथा उससे जूझने के लिए संतति तैयार करके आगे बढ़ने का संकल्प लिया है । नारी विधाता की सर्वोत्तम और उत्कृष्ट कृति है । नारी की सूरत और सीरत की पराकाष्ठा और उसकी गहनता को मापना दुष्कर ही नहीं अपितु असंभव है । सामाजिक , सांस्कृतिक , धार्मिक , भौगोलिक , ऐतिहासिक , और साहित्यिक जगत में नारी के विविध स्वरूपों का न केवल बाह्य , अपितु अंर्तमन के गूढतम सौन्दर्यात्मक स्वरूप का भी रहस्यों द्घाटन हुआ है । नारी प्रकृति एवं ईश्वर द्वारा प्रदत्त अदभुत' पवित्र साध्य' है । जिसे अनुभव करने के लिए' पवित्र साधक' का होना आवश्यक है । इसकी न तो कोई सीमा है और न ही कोई छोर यह तो एक विराट स्वरूप है , जिसके समक्ष स्वयं विधाता भी नतमस्तक होता ह । यह अमृत वरदान होने के साथ - साथ दिव्य औषधि भी है ।

कीवर्ड: भौगोलिक, धरोहर, परंपरा, हस्तांतरित, सहिष्णुता, विविधता, योगदान, सर्जनशीलता।

How to cite this article: *Dr. Eisha Sharma, "Promotion of Indian Languages, Art and Culture through NEP-2020" Published in International Journal of Scientific Modern Research and Technology (IJSMRT), ISSN: 2582-8150, Volume-12, Issue-1, Number 1, July 2023, pp.01-07, URL: www.ijsmrt.com/wp-content/uploads/2026/09/IJSMRT-23070101.pdf*

Copyright © 2023 by author (s) and International Journal of Scientific Modern Research and Technology Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

CC BY

IJSMRT-23070101

I. प्रस्तावना

नारी ही वह सौंधी मिट्टी की महक है , जो जीवन की बगिया को महकाती है और न केवल व्यक्तिगत , बल्कि राष्ट्र निर्माण एवं विकास में अपनी महती भूमिका निभाती है । नारी के लिए यह कहा जाय कि यह " विविधता में एकता है । तो काई बडी बात नही होगी , क्योंकि महिलाओं के बाह्य स्वरूप , सौन्दर्य और पहनावे में विधिता तो होती है , लेकिन उनके मानस में एकाकार और केन्द्रिय शक्ति ईश्वर की तरह ' एक ' होती। इसी शक्ति के इर्द - गिर्द सूर्य और अन्य ग्रहों की भाँति अनेक प्रकार के सदुण निरन्तर गतिमान रहते है जैसे विश्वास प्रेम स्वरूपा , निष्ठा , दया सर्मपण , त्याग , बलिदान , ममता , शीलता , स्नेह , कुशलता , कर्तव्यपराणयता, सहनशीलता , मर्यादा समात सृजनशीलता , सहिष्णुता , इत्यादि इन्ही विविध शक्तियों

के परिणामस्वरूप महिलाओं का राष्ट्र निर्माण और विकास में अदभुत और अतुलनीय योगदान पाया जाता है। राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों का सबसे बड़ा योगदान घर एव परिवार को संभलने के रूप में हमेशा रहा है। किसी भी समाज में श्रम विभाजन के अर्न्तगत कुछ सदस्यों को घर एवं बच्चे को संभालना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दायित्व है।

II. राष्ट्र में महिलाओं की भूमिका

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं ने भी अहम भूमिका निभाई है। इसे भुलाया नहीं जा सकता। राजा राम मोहनराय ने सती प्रथा को समाप्त करने के लिए महिलाओं का सहयोग लिया था शारदा एक्ट के माध्यम से बाल विवाह को समाप्त किया गया। मेहरबाई टाटा ने अपनी जेवर जिसमें कीमती जुठली हीरा भी शामिल था, राष्ट्र को समर्पित कर दिया। इस जेवर से टाटा मैमोरियल कैंसर अनुसंधान केन्द्र मुम्बई बना ऐस अनेक उदाहरण है जो इस राष्ट्र की महिलाओं की व्यापक सोच को दर्शाता है।

भारत की महिलाओं का इस योगदान को याद करने की आवश्यकता है। महिलाओं की भागीदारी सभी क्षेत्रों मेंउल्लेखनीय रूप से पुरुषों के समान समझी जानी चाहिए। महिला एक ऐसी शक्ति मानी जाती है। जो समय आने पर अपनी रक्षा के लिए चंडी का रूप भी धारण कर लेती है। परिवार देश प्रदेश की प्रगति में हमेशा महिलाओं का अहम योगदान रहता है। महिलाएं अंतरिक्ष तक अपना परचम लहरा आई है। आज हर क्षेत्र में महिलाये पुरुषों की बराबरी कर रही है। हर कदम पर पुरुषों का साथ देते हुए देश के चहुमुखी विकास में मत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

III. भारतीय संस्कृति में महिलाएं

जब भारतीय ऋषियों ने अथर्ववेद मे "माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः (अर्थात भूमि मेरी माता है। और हम इस धरा के पुत्र है।) की प्रतिष्ठा की तभी सम्पूर्ण विश्व में नारी महिमा का उद्घोष हो गया था।

नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी के महत्व को बताते हुए कहा था कि मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूगों। कौन भूल सकता है माता जीजाबाई को, जिसकी शिक्षा - दीक्षा ने शिवाजी को महान देशभक्त और कुशल योद्धा बनाया। कौन भूल सकता है पन्नाधाय के बलिदान को पन्नाधाय का उत्कृष्ट त्याग एवं आदर्श इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वह उच्चकोटि की कर्तव्य पराणता थी। अपने बच्चे का बलिदान देकर राजकुमार का जीवन बचाना सामान्य कार्य नही था हाडी रानी के त्याग एवं बलिदान की कहानी तो भारत के घर - घर में गायी जाती है।

रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्ताना, पदमिनी और मीरा के शौर्य एवं जौहर एवं भक्ति ने मध्यकाल की विकट परिस्थितियों में भी अपनी सुकीर्ति का झण्डा फहराया। कैसे कोई स्मरण न करे उस विद्यावती का जिसका पुत्र फॉसी के तखते पर खड़ा था और माँ की आँखों में आँसू देखकर पत्रकारों ने पूछा कि एक शहीद की माँ होकर आप रो रही है तो विद्यावती का उत्तर था कि मैं अपने पुत्र की शहीदी पर नही रो रही, कदाचित अपनी कोख पर रो रही हूँ कि काश मेरी कोख ने एक और भगतसिंह पैदा किया होता, तो मै उसे भी देशकी स्वतन्त्रता के लिए समर्पित कर देती। ऐसा था भारतीय माताओं का आदर्श ऐसी थी उनकी राष्ट्र के प्रति निष्ठा परिवार के केन्द्र मे नारी है। परिवार के सारे घटक इसी के चतुर्दिक घूमते है, वही पोषण पाते है और विश्राम, वही सबको एक माला में पिरोये रखने का प्रयास करती है। किसी भी समाज का स्वरूप वहाँ की नारी की स्थिति पर निर्भर करता है, यदि उसकी स्थिति सुदृढ एवं सम्मानजनक हौ तो समाज भी सुदृढ एवं मजबूत होगा।

भारतीय महिला सृष्टि के आरम्भ में अनन्त गुणों की आगार कर रही है। पृथ्वी की सी सहनशीलता सूर्य जैसा तेज, समुद्र की गम्भीरत, पुष्पों जैसा मोहक सौंदर्य, कोमलता और

चन्द्रमा जैसी शीतलता महिला में विद्यमान है । वह दया करूणा , ममता , सहिष्णुता ओर प्रेम की पवित्र मूर्ति है । नारी का त्याग ओर बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि ह । बाल्यावस्था से लेकर मृत्यु पर्यन्त वह हमारी संरक्षिका बनी रहती है । सीता , सावित्री , गार्गी , मैत्रेयी जैसी महान नारियों ने इस देश को अलंकृत किया है । निश्चित ही महिला इस सृष्टि की सबसे सुन्दर कृति तो है ही , साथ ही साथ एक समर्थ अस्तित्व भी है । वह जननी है , अतः मातृत्व महिमा से मंडित है । यह सहचरी है , इसलिए अर्धागनी के सौभाग्य से श्रंगारित है । वह गृहस्वामिनी है इसलिए अननपूर्णा के ऐश्वर्या से अलंकृत है । वह शिशु की पथम शिक्षिका है । इसलिए गुरु की महिमा से गौरवान्वित है । महिला घर समाज और राष्ट्र का आदर्श है । कोई पुण्य कार्य यज्ञ अनुष्ठान , निर्माण आदि महिला के बिना पूर्ण नही होता है । सशक्त महिला सशक्त समाज की आधार शिला है ।

महिला सृष्टि का उत्सव , मानव की जननी , बालक की पहली गुरु तथा पुरुष की प्रेरणा है । यदि महिला को श्रद्धा की भावना अर्पित की जाय तो वो विश्व के कण - कण को स्वार्गिक भावनाओं से आत - प्रोत कर सकती है । महिला एक सनातन शक्ति है । वह आदिकाल से उन सामाजिक दायित्वों को अपने कन्धों पर उठाये आ रही है , जिसे अगर पुरूषों के कन्धे पर डाल दिया गया होता , तो वह कब का लडखडा गया होता पुरातनकालीन भारत में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था । पुरुषों के समान ही उन्हें सामाजिक , राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अधिकार था , वे रणक्षेत्र में भी पति को सहयोग देती थी ।

देवासुर संग्राम में कैकेयी ने अपने अद्वितीय रणकौशल से महाराज दशरथ को चकित कर दिया था , याज्ञवल्क्य की सहधर्मिणी गार्गी ने आध्यात्मिक धन के समक्ष सांसारिक धन तुच्छ हो सिद्ध कर समाज में अपना आदरणीय स्थान प्राप्त किया थां विद्योत्तमा की भूमिका सराहनीय है , जिसने कालिदास को संस्कृत का प्रकाणड पंडित बनाने में सफलता प्राप्त की तुलसीदास जी के जीवन को अध्यात्मिक चेतना देने में उनकी पत्नी का ही बुद्धि चातुर्य था । मिथिला के महापंडित मंडनामिश्र की धर्मपत्नी विदुषी भारती ने शंकराचार्य जैसे महाज्ञानी व्यक्तित्व को भी शास्त्रार्थ में पराजित किया था । लेकिन चूंकि भारत के अस्सी प्रतिशत से अधिक तथाकथित विद्वान गौतम बुद्धोत्तरकालीन भारत को ही जानते पहचानते हैं और उनमे भी प्रतिष्ठा की धुरी पर बैठे लोग पाश्चस्य विद्वानों द्वारा अंग्रेजी में लिखें ग्रन्थों से ही भारत का अनुभव एवं मूल्याकन करते है , अतः नारी विष्यक आर्य - अवधारणा तक वे पहुँच ही नही पाते । उन्हें केवल वह नारी दिखाई पड़ती है जिस देवदासी बननेको बाह्य किया जाता था , जो नगरबधू बनती थी नारी के इन संकीर्ण रूपों से इंकार तो नहीं किया जा सकता । परन्तु हम यह समझना चाहिए कि वे नारी के संकटकालीन रूप थे । शाश्वत नही । हमें भी यह स्वीकार करना चाहिए कि रोमन साम्राज्य (ईसाई जगत , इस्लाम जगत) तथा अनयान्य प्राचीन संस्कृतियों में नारी की जो अवमानना दुर्दशा एवं लांछना हुई है , जिसके प्रमाणिक दस्तावेज उपलब्ध है । वैसा भारतवर्ष में कम से कम , मालवेश्वर भोजदेव के शासन काल तक कभी नहीं हुआ ।

इस्लामिक आकमणों के अनन्तर भारत का सारा परिदृश्य ही बदल गया , मलिक काफूर , अलाउद्दीन तथा औरंगजेब सरीखे आततायियों ने तो मनुष्यता की परिभाषा को ही झूठला दिया सल्तनत काल के इसी नैतिकता - विोन वातावरण में नारियों के साथ भी अपरिमित अत्याचार हुए । उसके पास विजेता की भोग्या बन जाने अथवा आत्मघात कर लेने के अतिरिक्त और उपाय ही क्या था ? फलतः असहाय नारियों आकाताओं की भोग्या बनती रही लेकिन यह ध्यान रहे कि यह भारत की पराधीनता के काल थे , स्वाधीनता के नही ।

IV. स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय महिलाएं

अब हम स्वतन्त्रता आंदोलन व कालखंड को देखे तो हम देखते है कि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं ने जितनी बडो संख्या में भाग लिया , उससे सिद्ध होता है कि समय आने पर महिलायें प्रेम की पुकार को विद्येह की हुकार में तब्दील कर राष्ट्रीय अखण्डता को अक्षुण्ण बनाने ये अपना सर्वस्व समर्पित कर सकती है । रानी लक्ष्मीबाई , सरोजिनी नायडू , मादाम भिखजी कामा , अरुणा आसफ अली एनी बेसेन्ट , भगिनी निवदिता , सुचेता कृपलानी , कैप्टन लक्ष्मी सहगल , दुर्गा भाभी एवं क्रान्तिकारियों को सहयोग देने वली अनके महिलायें भारत में अवतरित हुई जिन्होंने राष्ट्र के निर्माण के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया । इतिहास साक्षी है जब - जब समाज या राष्ट्र में नारी को अवसर तथा अधिकार दिया है , तब - तब नारी ने विश्व के समक्ष श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

मैत्रेयी , गार्गी , विश्ववारा घोषा , अपाला , विदुषी भारती आदि विदुषी स्त्रियों शिक्षा के क्षेत्र में अपने बहुमूल्य योगदान के लिए आज भी पूजनीय है । आधुनिक काल में महादेवी वर्मा , सुभद्रा कुमारी चौहान , महाश्वेता देवी , अमृता प्रीतम आदि स्त्रियों ने साहित्य तथा राष्ट्र की प्रगति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । कला के क्षेत्र में लता मंगेशकर , देविका रानी , वैजन्तीमाला , सोनाल मान सिंह आदि का योगदान वास्तव मे प्रशंसनीय है । वर्तमान में महिलायें समाज सेवा , राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र उत्थान के अनेक कार्यो में लगी है । महिलाओं ने अपनी कर्तव्य पराणयता से यह सिद्ध किया है कि वे किसी भी स्तर पर पुरूषों से कम नहीं है । बल्कि उन्होने तो राष्ट्र निर्माण में अपनी श्रेष्ठता ही प्रदर्शित की है ।

शारीरिक एवं मानसिक कोमलता के कारण महिलाओं का रक्षा सम्बन्धी सेवाओं के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है किन्तु भारत की पहली महिला आईपीएस श्रीमती किरण बेदो ने ही अपनी कर्तव्यनिष्ठा से इस मिथक को पूरी तरह से तोड दिया है । अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि अब महिला जगत का बहुत बडा भाग अपनी संवादहीनता , भीरूता एवं संकोचशीलता से मुक्त होकर सुदृढ समाज के सृजन में अपनी भागीदारी के लिए प्रस्तुत है । समस्त सामाजिक संदर्भों से जुडी महिलाओं की सक्रियता को अब न केवल पुरूष बल्कि परिवार समाज एवं राष्ट्र ने भी सगर्व स्वीकारा है । वर्तमान में नारी शक्ति का फैलाव इतना घनीभूत हो गया है कि कोई भी क्षेत्र इनके सम्पर्क से अछूता नहीं है ।

आज नारी पुरूषों के समान ही सुशिक्षित , सक्षम एवं सफल है । चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो , साहित्य , चिकित्सा , सेना , पुलिस प्रशासन , व्यापार , समाज सुधार , पत्रकारिता , मीडिया एवं कला का क्षेत्र हो , नारी की उपस्थिति , योग्यता एवं उपलब्धियों स्वयं अपना प्रत्यक्ष परिचय प्रस्तुत कर रही है । घर परिवार से लेकर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर तक उसकी कृति पताका लहरा रही है । दोहरे दायित्वों से लदी महिलाओं ने अपनी दोगुणी शक्ति का प्रदर्शन करा सिद्ध कर दिया है । कि समाज की उन्नति आज केवल पुरुषों के कन्धों पर नहीं अपितु उनके हाथों का सहारा लेकर भी ऊंचाइयों की ओर अग्रसर होती है ।

उन्नत राष्ट्र की कल्पना तभी यथार्थ का रूप धारण कर सकती है , जब महिला सशक्त होकर राष्ट्र को सशक्त करें । महिला स्वयं सिद्ध है , वह गुणों की सम्पदा है । आवश्यकता है इन शक्तियों का महज प्रोत्साहन देने की यही समय की मॉग है । " नारी ब्रहमा है विद्या है श्रद्धा है आदिशक्ति है,सदगुणों की खान है । वह सब कुछ है । जो इस प्रकट विश्व में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होती है "

V. नारी सनातन शक्ति के रूप में

नारी वह सनातन शक्ति है , जो अनादिकाल से उन सामाजिक दायित्वों का वहन करती आ रही है , जिन्हें पुरुषों का कंधा संभाल नही पाता , माता - पिता के रूप में नारी

ममता , करूणा वात्सल्य , सहृदयता जैसे सदगुणों से युक्त है ।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का अनेक क्षेत्रों योगदान रहा है :

- पथ प्रदर्शक के रूप में योगदान
- गृहिणी के रूप में योगदान
- वैज्ञानिक क्षेत्र में योगदान
- नागरिक निर्माण के रूप में
- साहित्यिक क्षेत्र में योगदान
- प्रशासनिक क्षेत्र में योगदान
- स्वतन्त्रता आंदोलना में योगदान
- राजनैतिक क्षेत्र में योगदान
- सामाजिक , शैक्षिक , धार्मिक क्षेत्र में योगदान

1. पथ प्रदर्शक के रूप में योगदान : - माँ के बाद पत्नी का अवतार राष्ट्र निर्माण और विकास के साथ पथ प्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है , पत्नी चाहे तो पति को गुणवान ओर सदगुणी बना सकती है । सदियों से देखने में आया है कि जब भी कभी देश पर संकट आया है तो पत्नियों के माथें पर तिलक लगाकर जोश , जुनून ओर विश्वास के साथ रणभूमि में भजा है । यही नही पत्नी हाडी रानी बनकर शीश काटकर दे देती है । तुलसीदास जी के जीवन का आध्यात्मिक चेतना प्रदान करने में उनकी पत्नी रत्नावती ' का ही हाथ था । ' विधोत्मा ने कालिदास को संस्कृत का प्रकाड महाकवि बनाया था ।

2. गृहणी के रूप में योगदान - भारतीय समाज में महिलाएं परिवार की ' धूरी होती है , जो कि एक गृहणी के रूप में राष्ट्र निर्माण और विकास के रूप में अपनी उत्कृष्ठ भूमिका निभाती है , जो कि अन्पूर्णा ' के ऐश्वर्य से अलंकृत और सुशोभित है । एक गृहिणी के रूप में वह संपूर्ण परिवार के संचालन हेतु बचत की प्रवृत्ति को भी विकसित करती है । वर्ष 1930 1998 , 2008 और 2014 में आई वैश्विक मंदी से सभी देश ग्रसित हुए , परंतु भारत बहुत अल्प रूप में , क्योंकि भारतीय महिलाओं की बचत की प्रवृत्ति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बचाया ऐसा ही उदाहरण हमें वर्ष 2016 को नोटबंदी के दौरान देखने को मिला । इसी के साथ ही लगभग 65 प्रतिशत महिलाएं कृषि एवं पशुपालन का कार्य करते हुए देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में योगदान देती है । इसके अतिरिक्त हस्तकलाओं का निर्माण करते हुए भी विकास कार्यों को गति प्रदान करती हैं । अतः यह भी राष्ट्र निर्माण और विकास का हिस्सा है ।

3. वैज्ञानिक क्षेत्र में योगदान - आत्मविश्वास , लगन , महनत कर्मठता , सृजनशीलता और बुद्धि कौशल के कारण कलाओं के लिए वैज्ञानिक खोजों और अनुसंधान क्षेत्र अछूता नहीं है । आज अनेक महिलाएं रक्षा विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों के रूप में अपना योगदान राष्ट्र निर्माण और विकास में दे रही है । डॉक्टर टेसी थॉमस ने अग्नि -5 मिसाइलों की योजना का प्रतिनिधित्व करते हुए भारत की मिसाइल वूमन और अग्नि पुत्री का सम्मान प्राप्त किया है । इसके अतिरिक्त सुनीता विलियम्स कल्पना चावला ने भी अंतरिक्ष के क्षेत्र में देश का नाम रोशन किया है । इन सबके अतिरिक्त ऐसी बहुत सी महिलाएं वैज्ञानिक विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए राष्ट्र निर्माण और विकास में अपनी योगदान दे रही है ।

4. नागरिक निर्माण के रूप में योगदान मानव कल्याण की भावना , कर्तव्य , सर्जनशीलता एवं ममता को सर्वोपरि मानते हुए महिलाओं ने इस जगत में मां के रूप में अपनी सर्वोपरि भूमिका को निभाते हुए राष्ट्र निर्माण और विकास में अपने विशेष दायित्वों का निर्वहन किया है । महिलाएं बच्चों को जन्म देकर उनका पालन -पोषण करते हुए उनमें संस्कार एवं सद्गुणों का उच्चतम विकास करती हैं तथा राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारी को सुनिश्चित करती है । ताकि राष्ट्र निर्माण और विकास निर्बाध गति से होता रहे । वीर भगत सिंह , चंद्रशेखर , विवेकानंद जैसी विभूतियों का देशहित में अवतार ' मां ' के स्वरूप की देन है । माता जीजाबाई , जयवंताबाई , पन्नाधाय जैसी अनेक माताओं का

त्याग , समर्पण और बलिदान आज भी इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अंकित है । मां ही है , जो बहुआयामी व्यक्तित्व का निर्माण औरविकास करती है ।

5. साहित्यिक क्षेत्रों में योगदान - साहित्य समाज का दर्पण होता है । साहित्य के माध्यम से राष्ट्र निर्माण और विकास उच्चतम स्तर पर किया जा सकता है , क्योंकि साहित्य के द्वारा न केवल बुद्धि कौशल वरन् व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास किया जा सकता है । यह साहित्यिक कर्म यदि महिलाओं में विद्यमान ' मर्म ' साहित्य को गुणवत्तापुर्ण बनाता है । अनेक महिलाओं ने साहित्य - सर्जन के द्वारा राष्ट्र निर्माण और विकास में अपना विशेष योगदान दिया है ; जैसे- महादेवी वर्मा , झुंपा लाहिड़ी , सुभद्रा कुमारी चौहान , मैत्रेयी पुष्पा , ममता कालिया , पद्मा सचदेव इत्यादि । इन्होंने ऐसा कालजयी साहित्य लिखा , जो व्यक्तित्व के विकस के साथ - साथ आध्यात्मिक और नैतिक विकास को बल प्रदान करता है , जिसमें चेतना और राष्ट्र निर्माण के स्वर मुखरित होते हैं ।

6. प्रशासनिक क्षेत्र में योगदान किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास का सूचक होता है । यदि प्रशासनिक दक्षता और कुशलता सुदृढ़ है , तो राष्ट्र की प्रगति और विकास सुनिश्चित है । प्रथम महिला आई.ए.एस. अन्ना जॉर्ज हो या प्रथम में अनेक महिलाएं भारतीय प्रशासनिक सेवा और राज्य प्रशासनिक सेवाओं में न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं , अपितु सर्वोच्च रैंक प्राप्त कर समाज और देश का गौरव भी बढ़ा रही है ।

7. स्वतंत्रता आंदोलना में योगदान पराधीनता राष्ट्र निर्माण और विकास में न केवल बाधक होती है , अपितु यह राष्ट्र को अस्थिरता प्रदान करती है । यही कारण रही है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर भारत का नवनिर्माण करवाया । हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक महिलाओ ने अपने अमूल्य योगदान देते हुए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया । कॉप्टन लक्ष्मी सहगल , अरूण आसफ अली , मैडम भीखाजी कामा , सरोजिनी नायडू , एनी बेसेन्ट और दुर्गा भाभी न जाने कितनी ही महिलाओं ने राष्ट्र निर्माण और विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया ।

8. राजनैतिक क्षेत्र में योगदान देश की राजनीति की दिशा और दशा इस बात पर निर्भर करती है कि उसका संचालन करने वाला व्यक्ति कैसा है ? इसी क्रम में महिलाओं ने बखूबी निभा रही है । श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित विश्व की प्रथम महिला थी , जो संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनी सरोजिनी नायडू , सुचेता कृपलानी , इन्दिरा गाँधी इत्यादि अनेक महिलाओं ने राजनैतिक प्रतिभा का प्रयोग राष्ट्र निर्माण और विकास में किया है , जो एक महत्वपूर्ण और सार्थक कदम है । वर्तमान समय में भी राजनैतिक क्षेत्र में भी महिलाओं की भूमिका अत्यन्त बढ़ गई है और इस क्षेत्र में भी महिलाये बढ़ - चढकर अपनी भूमिका के साथ न्याय कर रही है : - जैसे वितमंत्री निर्मला सीतारमन , ममता बनर्जी , मायावती , स्मृति ईरानी , सोनिया गांधी , प्रियंका गांधी , सरसितर कौर , बसुधरा राजे सिंधिया ,द्रौपदी मुर्मू , प्रतिभा पाटिल , मृदुला सिन्हा आदि प्रमुख राजनीतिक हस्तियाँ है , जिन्होने अपने कार्यों से देश का सम्मान बढाया ।

9. सामाजिक , शैक्षिक , धार्मिक क्षेत्र में योगदान सभ्यता , संस्कृति , संस्कार और परम्परा महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते है । अतः महिलाओं के सामाजिक शैक्षिक - धार्मिक कार्य व्यक्ति , परिवार , समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाते है । कहा भी गया है कि " सशक्त महिला सशक्त समाज की आधरशिला है । माता बच्चों की प्रथम शिक्षिका होती है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी होती है । यह शिक्षिका परिवार से निकलकर समाज में शिखा का दान करती है । देश की प्रथम शिक्षिका " सावित्री बाई फूले एक अनुकरणीय उदाहरण है । वैदिक सभ्यता की मैत्रेयी , गार्गी , विश्वबारा घोसा लोपामुद्रा और विदुषी नामक महिलायें शिक्षा के क्षेत्र में योगदान हेतु

आज भी पूजनीय है जिन्होंने राष्ट्र निर्माण ओर विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है ।

VI. निष्कर्ष

महिलाओं ने अपने कर्तव्य कर्मठता और सृजनशीलता के माध्यम से राष्ट्र निर्माण और विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है । आज नारी ही पुरुषों के समान ही सुशिक्षित , समक्ष और सफल है , चाहे वह क्षेत्र सामाजिक , साहित्यिक , आर्थिक , राजनैतिक धार्मिक , खेल , कला , इतिहास , भूगोल , खगोल , चिकित्सा सेवा , मीडिया या पत्रकारिता आदि कोई भी हा । नारी की उपस्थिति योगदान , योग्यता उपलब्धित मार्मिकता और सर्जनशीलता स्वयं एक प्रत्यक्ष परिचय देती है । परिवार और समाज को संभालते हुए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारी ने सदैव ही विजय पताका लहराते हुए राष्ट्र निर्माण और विकास में अपना विशेष और अभूतपूर्व योगदान दिया है । यही कारण है कि चह सर्जना , अन्नपूर्ण देवी , युगदृष्टा आर युग दृष्टा होने के साथ ही स्वयं सिद्धा ' भी है ।

सन्दर्भ

[1] आदर्श पत्नी: त्रियम्बकयाज्वन द्वारा *स्त्रीधर्मपद्धति* (महिलाओं के कर्त्तव्यों में सहायक) (अनुवादक जूलिया लेसली), पेंग्विन 1995 आईएसबीएन 0-14-043598-0.http://www.cse.iitk.ac.in/~amit/books/tryambakayajvan-1989-perfect-wife-stridharmapaddhati.html पर *स्त्रीधर्मपद्धति* के विस्तृत अंश देखें।

[2] मिश्रा, आरसी (2006)। *लैंगिक समानता की ओर* . ऑथर्सप्रेस. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-7273-306-2. मूल से 29 अक्तूबर 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 नवंबर 2010.

[3] प्रूथी, राज कुमार; रामेश्वरी देवी और रोमिला प्रुथी (2001)। *महिलाओं की स्थिति और स्थिति: प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत में* । वेदम पुस्तकें. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-7594-078-6. मूल से 14 फ़रवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 नवंबर 2010.

[4] कात्यायन द्वारा *वर्तिका*, 125, 2477

[5] पतंजलि द्वारा अष्टध्यायी के लिए टिप्पणियां 3.3.21 और 4.1.14

[6] आर.सी. मजूमदार और ए.डी. पुसल्कर (संपादक): भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति. वॉल्यूम I, वैदिक युग. मुंबई: भारतीय विद्या भवन 1951, पी.394

[7] "Vedic Women: Loving, Learned, Lucky!". मूल से 20 नवंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.

[8] "InfoChange women: Background & Perspective". मूल से 24 जुलाई 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.

[9] Jyotsana Kamat (2006-1). "Status of Women in Medieval Karnataka". मूल से 1 जनवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[10] Vimla Dang (19 जून 1998). "Feudal mindset still dogs women's struggle". The Tribune. मूल से 19 दिसंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.